बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' कृत

रक्षाबन्धन पर्व पूजा

मधुर स्वर : डॉ. अंकित शास्त्री, लूणदा

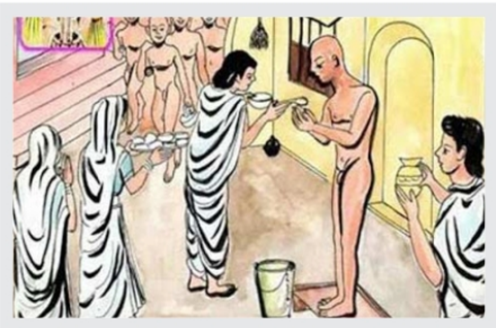

स्थापना

(छन्द–ताटंक)

घोर उपसर्गजयी समतामय, रत्नत्रय के साधक हैं।
काया से भी निःस्पृह जो, निज शुद्धातम आराधक हैं।।
अहो! अकंपन आदि मुनीश्वर, हृदय हमारे वास करो।
हो वात्सल्य विष्णु मुनिवर–सम, श्री जिनधर्म प्रकाश करो।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

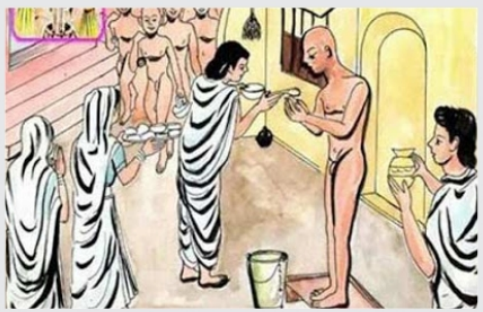

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्तशतकमुनि!
अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्तशतकमुनि!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्तशतकमुनि!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

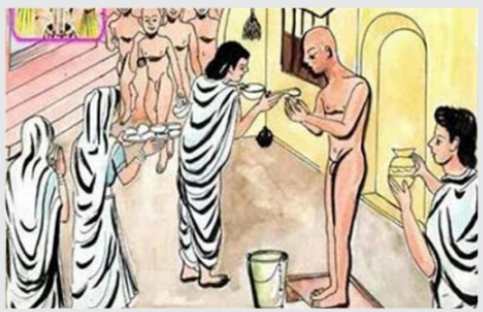

प्रासुक जल से पूजा करते, रोम-रोम हुलसाया है।
अहो! सहज वात्सल्यमयी, जिनशासन मन को भाया है।।
हुए अकंपित श्री अकंपन आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य-विष्णुकुमारादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो
जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

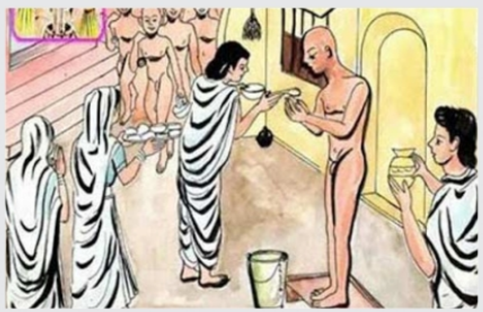

देख प्रभाव शान्त भावों का, बलि आदि भी विनत हुए।
करें अर्चना हम चंदन से, मुक्तिमार्ग के पथिक हुए।।
हुए अकंपित श्री अकंपन आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य–विष्णुकुमारादि सप्तशतक मुनिवरेभ्य: संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

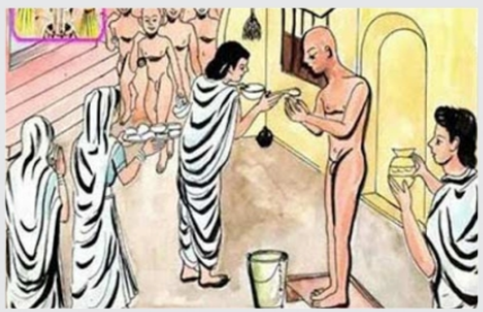

क्षत–विक्षत तन हुआ किन्तु, परिणाम आपके अक्षत ही।
अक्षत से पूजा करते हम, करें भावना ऐसी ही।।
हुए अकंपित श्री अकंपन आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य–विष्णुकुमारादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

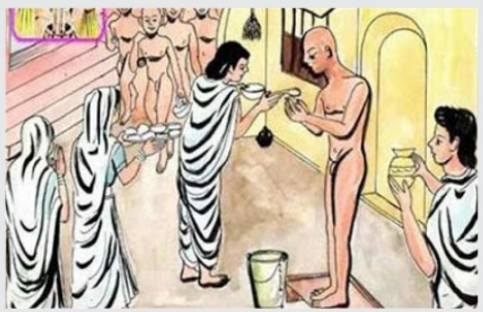

भायें हम निष्काम भावना, कामजयी हों आप समान।
पुष्पों से करते पूजा हम जानें सहज ज्ञान में ज्ञान।।
हुए अकंपित श्री अकंपन आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य-विष्णुकुमारादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

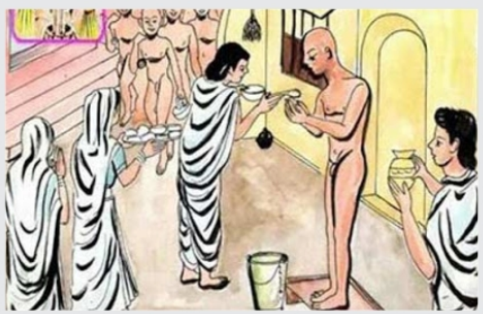

निजानन्द में तृप्त साधु आदर्श हमारे सदा रहें।
अहो! पूजते हैं चरु से शुद्ध भोजन से भी विरत रहें।।
हुए अकंपित श्री अकंपन आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य–विष्णुकुमारादि–सप्तशतक–मुनिवरेभ्यः
क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

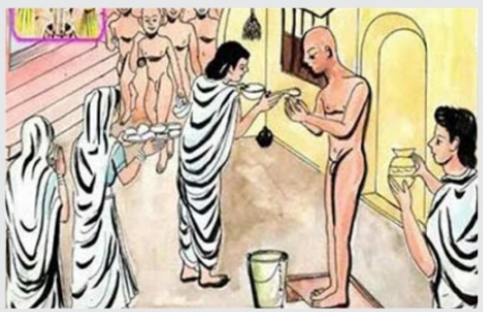

हे निर्मोही! उपसर्गों में द्वेष नहीं तुमको आया।
ज्ञानमयी वैराग्य आप-सम पाने को दीपक लाया।।
हुए अकंपित श्री अकंपन आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य-विष्णुकुमारादि-सप्तशतक-मुनिवरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

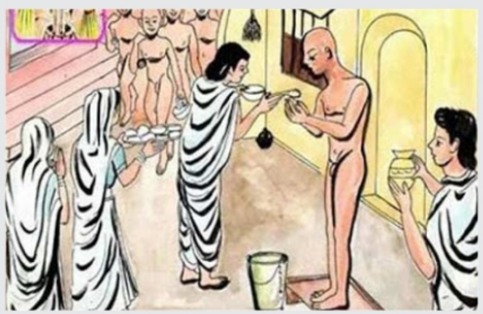

बाह्य अग्नि से तन झुलसा अन्तर अग्नि दुष्कर्म दहे।
धन्य महा समता के सागर धूप चढ़ाकर पूज रहे।।
हुए अकंपित श्री अकंपन आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य-विष्णुकुमारादि-सप्तशतक-मुनिवरेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

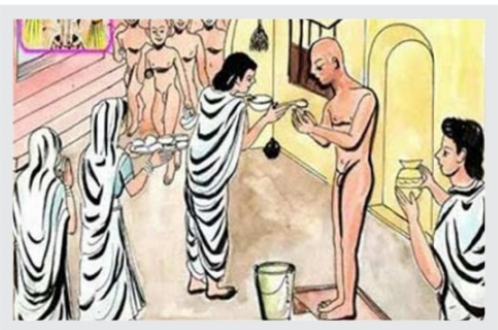

उदासीन हो कर्म–फलों में ज्ञाता–दृष्टा आप रहे।
साम्यभाव के ही प्रभाव से उपसर्गों से मुक्त रहे।।
हुए अकंपित श्री अकंपन आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य–विष्णुकुमारादि–सप्तशतक–मुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

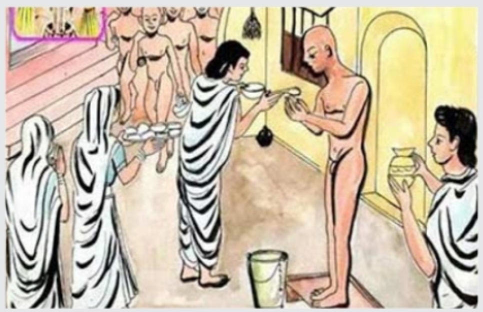

है अनर्घ्य महिमा मुनिवर की है अनर्घ्य ही शुद्धातम।
हों अनर्घ्य परिणाम हमारे अर्घ्य चढ़ा ध्यावें आतम।।
हुए अकंपित श्री अकंपन आदि मुनीश्वर आतम में।
किया दूर उपसर्ग विष्णु मुनि प्रीति धरी शुद्धातम में।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्य-विष्णुकुमारादि-सप्तशतक-मुनिवरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

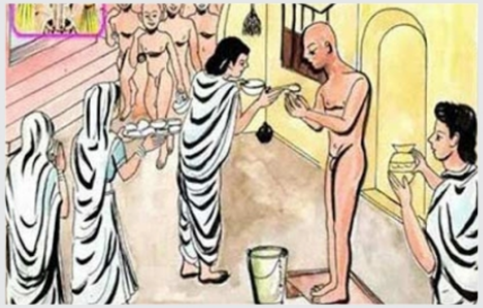

जयमाला

(दोहा)

रक्षा बंधन पर्व दिन, याद करें मुनिराज।
गावें जयमाला सुखद, सफल होय सब काज।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

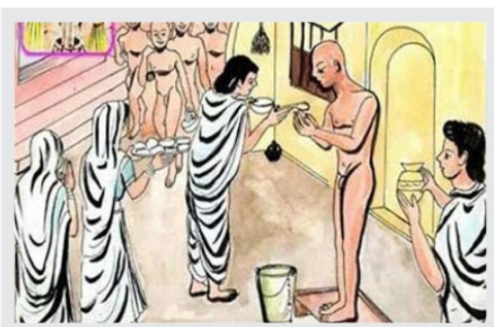

(पद्धरि)

जय मुनि जीवन आनन्दमयी, पर से निष्पृह शुद्धात्ममयी।
है परम जितेन्द्रिय ज्ञानमयी, है परम तृप्त वैराग्यमयी।।
आरम्भ परिग्रह के त्यागी, शिव-सुख में ही वे अनुरागी।
विषयों की आशा भी न रही, संतुष्ट परिणति निज में ही।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

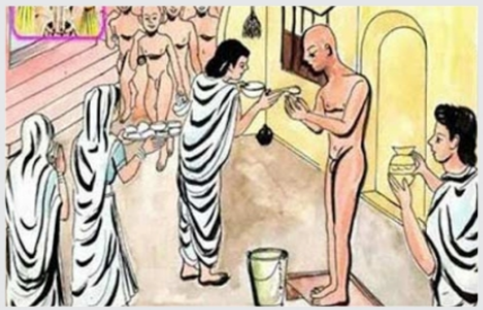

वर्ते अन्तर में भेदज्ञान, अनुशासन जिनका था महान।
रहते आज्ञा में गुरुवर की, मुद्रा जिनकी थी जिनवर-सी।।
था संघ सात सौ मुनियों का, अद्भुत समूह था गुणियों का।
उज्जयिनी नगरी में आया, भूपति दर्शन कर हर्षाया।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

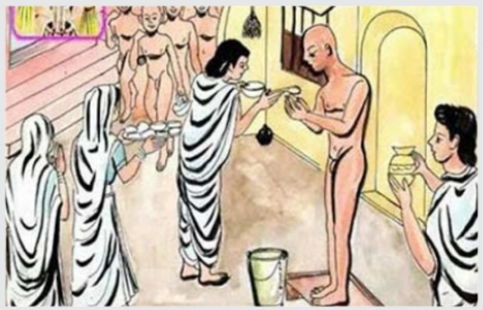

मुनि मौन रहे न विवाद हुआ, पर समय लौटते वाद हुआ।
श्रुतसागर से परास्त होकर, द्वेषी मंत्री क्रोधित होकर।।
रात्रि में आये वध करने, पर कीना कीलित देवों ने।
यह देख नृपति ने दिया दण्ड, निर्वासित मंत्री हुए खिन्न।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

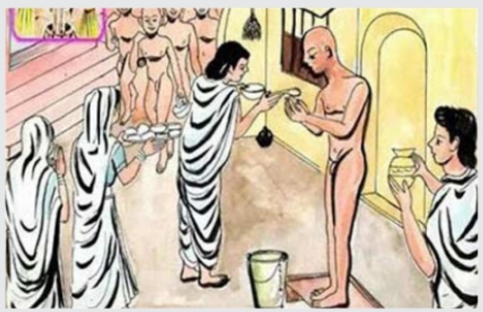

हस्तिनापुरी नगरी आकर, सेवा से नृप को हर्षा कर।
वरदान धरोहर रूप लिया, होकर निशंक वहाँ वास किया।।
फिर दैव योग से वहाँ संघ, आया पावस में नया रंग।
सब नर-नारी थे हर्षाये, पर मंत्री मन में घबराये।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

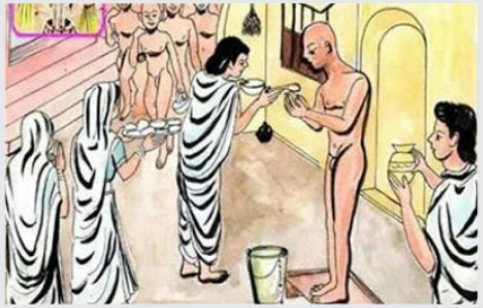

था निमित्त एक ही अविकारी, परिणति सबकी न्यारी–न्यारी।
वरदान नृपति से लिया माँग, पा राज्य रचाया क्रूर स्वांग।।
मुनिसंघ समीप ही यज्ञ किया, अग्नि प्रज्वलित कर कष्ट दिया।
मुनिवर समताधर लीन हुए, नृप और प्रजाजन खिन्न हुए।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

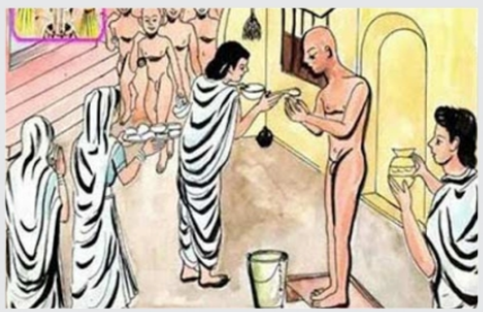

था हाहाकार मचा भारी, सुन समाचार अति दुखकारी।
विष्णुकुमार मुनि द्रवित हुए, वात्सल्य भाव वश चलित हुए।।
वामन बन कर बलि ढिंग आये, डग तीन भूमि ले हर्षाये।
विक्रिया बना तन फैलाया, बलि देख रूप था चकराया।।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

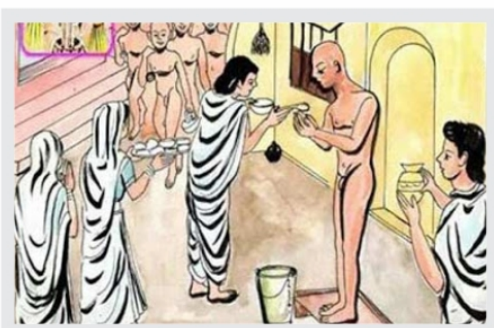

चरणों में मस्तक नवा दिया, जिनधर्म जिनधर्म सु अंगीकार किया।
उपसर्ग सहज ही दूर हुआ, घर-घर में मंगलाचार हुआ।।
मुनियों को शुद्ध आहार दिया, वात्सल्य धर्म था सिखा दिया।
ले प्रायश्चित्त विष्णु मुनिवर, तप द्वारा कर्म नाश सत्वर।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

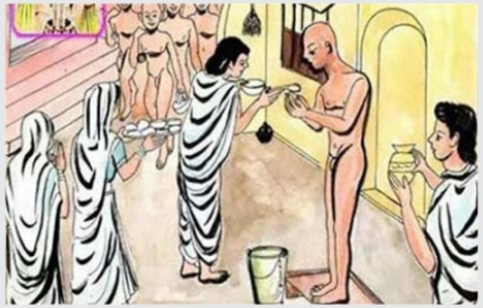

पंचमगति पायी अविकारी, हम करें वंदना सुखकारी।
रक्षाबंधन का पर्व चला, हमको भी शुभ संदेश मिला।।
वात्सल्य सहज ही विस्तार, निःशंकित हो समता धारें।
निरपेक्ष मौन सबसे उत्तम, निर्ग्रन्थ मार्ग ही लोकोत्तम।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

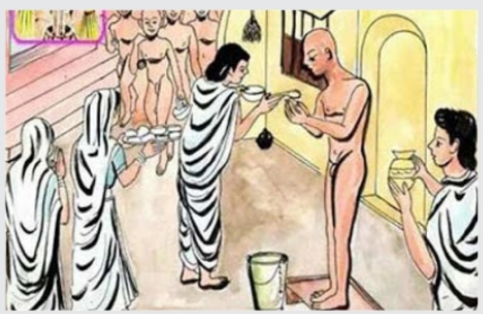

तन–मन–धन सब अर्पण करके, युक्ति से विनयविशुद्धि से।
जिनधर्म प्रभाव बढ़ावेंगे, निज शुद्धातम आराधेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्यविष्णुकुमारादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

वाद विवाद से दूर, करें सहज आराधना।
हो समता भरपूर, बढ़े सुधर्म प्रभावना।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु